भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्
नई दिल्ली द्वारा संपोषित

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

दयानन्द-दर्शन के विविध आयाम

दिनांक : 05 व 06 नवम्बर, 2022
(दिन शनिवार एवं रविवार)

प्रेरणा

प्रो. रघुवेन्द्र तँवर
कार्यकारी अध्यक्ष
भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्,
नई दिल्ली

प्रो. सच्चिदानन्द मिश्र
सदस्य सचिव
भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्,
नई दिल्ली

प्रधान संरक्षक

प्रो. के. पी. सिंह
कुलपति
महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली

डॉ. राजीव कुमार
कुलसचिव, महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली

संरक्षक

श्री योगेश कुमार जैन
मन्त्री, प्रबन्ध समिति

प्रो. वीर वीरेन्द्र सिंह
प्राचार्य

संयोजक

डॉ. अरविन्द कुमार
सहायक आचार्य एवं अध्यक्ष
संस्कृत विभाग

-: आयोजक :-

जगदीश सरन हिन्दू स्नातकोत्तर महाविद्यालय
अमरोहा-244221 (उ.प्र.)

संगोष्ठी की विषयवस्तु :–

भारत में नवजागरण के पुरोधा, प्रमुखतः धर्म एवं समाज–सुधारक के रूप में विख्यात, सुविख्यात दार्शनिक महर्षि दयानंद सरस्वती सच्चे शिव अर्थात् परमसत्य के अन्वेषण में संलग्न अद्वितीय जिज्ञासु, सत्यान्वेषी विद्वान् और चिंतक हैं, जिन्होंने प्रचलित भारतीय दार्शनिक प्रस्थानों की स्वतंत्र समालोचना पूर्वक मौलिक एवं तार्किक दर्शनशास्त्रीय अवधारणाओं का प्रतिपादन किया है। उनका चिंतन संप्रदाय विशेष पर अवलंबित न होकर वेदानुसारी, मौलिक तथा मानव जीवनोपयोगी है, जिसे समग्र रूप में **'दयानन्द–दर्शन'** कहा जा सकता है।

बुद्धिवाद पर आश्रित उनके बहुआयामी दर्शन में यथार्थ ज्ञान हेतु व्यक्ति की आत्मिक उन्नति एवं साधनापथ प्रशस्त करने के साथ ही इहलौकिक अभ्युदय की सुगम कार्ययोजना भी प्रदर्शित की गई है। इसमें परंपरा और बौद्धिकता का यथार्थजीवन में समुचित विनियोग है। जहाँ त्रैतवाद जैसे गूढ़ दार्शनिक सिद्धांत हैं, वहीं जगत् के मिथ्यात्व के निरसनपूर्वक मानव जीवन के चरम लक्ष्य – पुरुषार्थ चतुष्टय का साधन भी है। जहाँ जीवात्मा का नित्य, प्रमेय स्वरूप है, वहीं बन्ध–कर्मफल–व्यवस्था व पुनर्जन्म की अवश्यम्भाविता को बताकर मानव को आचार–व्यवहार और संयम की सीख भी दी गयी है। जहाँ जगत–नियंता, सृष्टा और संहारक ईश्वर के गुणानुरूप सौ नामों की व्याख्या है; वहीं ईश्वरोपासना का महत्त्व, विधि एवं ईश्वरानुशासन की शास्त्रसम्मत शिक्षा भी है; जहाँ शिक्षा का लक्ष्य– विमुक्ति और आत्मोन्नति है; वहीं स्वदेश तथा स्वसमाज की उन्नति हेतु स्वधर्म–निर्वाह की व्यवहारिक शिक्षा भी है। बालकों के सर्वांगीण विकास हेतु गर्भावस्था से ही श्रौत–स्मार्त्त विधान के अनुसार संस्कारों का निर्देश है; वहीं व्यवस्थित श्रेणीबद्ध पाठ्यचर्या की योजना भी प्रस्तुत की गई है, जिसमें मातृभाषा को शिक्षा का माध्यम तथा आर्षग्रंथों के समावेश व ब्रह्मचर्य–पालन को अनिवार्य माना है। उनके दार्शनिक विचारों के विविध आयाम हैं; जोकि व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र के सभी पक्षों को प्रभावित करते हैं।

उनका षड्दर्शन–समन्वयवाद, त्रैतवाद, कर्म–फलवाद, जीव–ब्रह्मभेदवाद, जीव–स्वातन्त्र्य, कार्यकारणवाद व परिणामवाद आदि अनेक मौलिक सिद्धांत तथा सांख्य के परिणामवाद और वैशेषिक के गुणवाद में ऐक्य, असत्कार्यवाद और सत्कार्यवाद में अविरोध, सांख्य में ईश्वरवाद, वेदांत में ब्रह्म–जीवभेदवाद इत्यादि नितांत अनूठे तथा स्थापित अवधारणाओं के विपरीत मौलिक मंतव्य शोधपरक अध्ययन और विश्लेषण की अपेक्षा रखते हैं।

उपविषय :–

- महर्षि दयानन्द का षड्दर्शन–समन्वयवाद।
- नास्तिक दर्शन और महर्षि दयानन्द।
- महर्षि दयानन्द और वैदिकदर्शन।
- महर्षि दयानन्द एवं त्रैतवाद।
- महर्षि दयानन्द का शिक्षादर्शन।
- महर्षि दयानन्द का स्वराष्ट्र–दर्शन।
- महर्षि दयानन्द एवं दार्शनिक आलोचना।
- महर्षि दयानन्द का जीवन–दर्शन।
- महर्षि दयानन्द का समाज दर्शन।
- महर्षि दयानन्द–दर्शन की वर्तमान में उपादेयता।
- महर्षि दयानन्द–दर्शन संबंधी अन्य विषय।

पंजीकरण लिंक : https://forms.gle/HwidBaPssgGy1XFU6
प्रतिभाग के लिए पंजीकरण अनिवार्य है। पंजीकरण निःशुल्क है।
पंजीकृत शोधार्थी विद्वान व्हाट्सएप ग्रुप से जुड़ें –
https://chat.whatsapp.com/KFdzPxXSnkyLyIAfCzuIVH

अमरोहा एवं जगदीश सरन स्नातकोत्तर महाविद्यालय

अमरोहा भारत के उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद मंडल का एक प्रमुख नगर है, जहाँ 15 अप्रैल 1997 को ज्योतिबाफुलेनगर (सम्प्रति अमरोहा) नाम से बनाए गए जनपद का मुख्यालय भी है। इतिहासकारों के अनुसार द्वापर में इसे अंबिकानगर के नाम से जाना जाता था। यह पांचाल्य देश का हिस्सा था, जिसे हस्तिनापुर के कौरवों ने हराकर राज्य स्थापित किया था। पुराणों के अनुसार पांडवों के वंशज आम्रहग्रोह ने 5000 वर्ष पूर्व इसकी स्थापना की थी। माना जाता है कि इंद्रप्रस्थ के राजा अमरचूड द्वारा बसाये जाने के कारण अमरोहा नाम पड़ा। 12वीं शताब्दी के आरंभ में शर्फ–उद्दीन उर्फ शाह विलायत ने रसीले आम और रोहू मछली की बहुतायत के कारण अमरोहू नाम रखा, जो बाद में अमरोहा बना। यहाँ स्थित प्राचीन वासुदेव तीर्थ सरोवर पांडवों के अज्ञातवास का साक्षी रहा है, जहां वासुदेव से पांडवों की भेंट हुई। इसके अतिरिक्त शाह विलायत–दरगाह, बाबा फरीदी दरगाह, गंगा मंदिर आदि अमरोहा के दर्शनीय स्थल हैं, जहां देश–विदेश के लोग आते हैं।

अमरोहा गंगा–जमुनी तहजीब का एक मिलाजुला संगम है। यह जनपद पूरे भारत को भाईचारे का पैगाम देता है। यहां के लोग मिलजुलकर होली, दिवाली, रमजान, ईद, गंगा स्नान, दुर्गा पूजा, दशहरा आदि महोत्सव के रूप में मनाते हैं। सूफियों, संतों, लेखकों, पत्रकारों की भूमि अमरोहा कालीन, ढोलक, पतंग, गुड, खांडसारी आदि के लिए विश्वविख्यात है।

अमरोहा जनपद राष्ट्रीय राजमार्ग 24 (सम्प्रति एन. एच. 09) बरेली से दिल्ली पर तथा रेल मार्ग लखनऊ से दिल्ली पर स्थित है। इसके पूर्व में मुरादाबाद, दक्षिण में संभल और हापुड़ तथा उत्तर में बिजनौर व पश्चिम में गाजियाबाद और बुलंदशहर अवस्थित हैं। जनपद में कुल 4 तहसील, 6 विकासखंड तथा 47 न्याय पंचायत सम्मिलित हैं।

अमरोहा की एक विशिष्ट पहचान साहू जगदीश सरन जी और उनके द्वारा स्थापित जे.एस. हिंदू पीजी कॉलेज अमरोहा है, जिसे उन्होंने 1960 में 17 बीघा भूमि और प्रभूत धन दान करके संस्थापित किया। यह जनपद का एकमात्र अनुदानित महाविद्यालय है। प्रारंभिक काल में 1975 तक आगरा विश्वविद्यालय से तत्पश्चात् महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली से अद्यतन संबद्ध है। लगभग दस सहस्र विद्यार्थियों के शिक्षण में निरत महाविद्यालय के प्राकृतिक हरितिमायुक्त एवं आधुनिक भवनों से सुसज्जित दो परिसर हैं। कला, वाणिज्य, विज्ञान तथा संगणक संकायों के सभी प्रमुख विषयों में स्नातक एवं परास्नातक कक्षायें संचालित हैं, 1972 में संस्कृत विभाग अस्तित्व में आया, जिसमें स्नातक स्तर की कक्षाएं संचालित हैं। अनेक विषयों के विद्वान प्राध्यापकों द्वारा शोधार्थियों को शोधकार्य भी कराया जा रहा है। 250 से अधिक शोधार्थी देने वाले इस महाविद्यालय में 14 से अधिक राष्ट्रीय संगोष्ठी तथा 600 से अधिक विभागीय संगोष्ठी आयोजित हो चुकी हैं। इसी क्रम में इस वर्ष भी प्रकृत अन्तर–विषयक द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी जगदीश सरन हिंदू स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अमरोहा उ.प्र., में भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली द्वारा संपोषित **'दयानन्द–दर्शन के विविध आयाम'** विषय पर **दिनांक 05 व 06 नवंबर 2022 (दिन शनिवार–रविवार)** को आयोजित की जा रही है, जिसमें आपकी सक्रिय सहभागिता एवं गरिमामयी उपस्थिति सानुरोध प्रार्थनीय है। प्रतिभागियों के आतिथ्य की समुचित व्यवस्था रहेगी। प्रतिनिधियों एवं विषय विशेषज्ञों को नियमानुसार मार्ग व्यय दिया जायेगा। प्रतिभाग हेतु **पंजीकरण निःशुल्क** है।

कृपया सेमिनार में सम्मिलित होने हेतु निर्दिष्ट उपविषयों में से किसी पर हिन्दी / English / संस्कृत में लिखित शोधपत्र का **एक पृष्ठीय सारांश (200 से 300 शब्द) दिनांक – 25 अक्टूबर 2022 तक** तथा पूर्ण शोधपत्र अधिकतम 04 से 06 पृष्ठों में (1500 से 2000 शब्द) में दिनांक – **30 अक्टूबर 2022** तक seminaricprjshdd2022@gmail.com पर Kruti Dev 010 / Time New Roman फोन्ट में प्रेषित करने का कष्ट करें।

मार्गदर्शन एवं परामर्श :–

- प्रो. ओ३म् प्रकाश पाण्डेय, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ
- प्रो. मुरलीमनोहर पाठक, कुलपति, लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय सं. वि.वि., नई दिल्ली
- प्रो. वाचस्पति मिश्र, अध्यक्ष, उ.प्र. संस्कृत संस्थान, लखनऊ
- डॉ. पूजा व्यास, निदेशक–शोध एवं योजना, भा.दार्शनिक अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली
- प्रो. सत्यदेव कौशिक, संस्कृत विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़
- प्रो. राजेश्वर प्रसाद मिश्र, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र
- प्रो. सारस्वत मोहन मनीषी, सुप्रसिद्ध कवि एवं साहित्यकार, दिल्ली
- प्रो. विनय विद्यालंकार, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
- प्रो. सुधीर आर्य, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- प्रो. भारतेन्दु पाण्डेय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
- प्रो. वेदप्रकाश डिंडोरिया, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
- डॉ. सुमेधा विद्यालंकार, प्राचार्या, कन्या गुरुकुल महाविद्यालय चोटीपुरा, अमरोहा
- प्रो. हिमांशु शेखर आचार्य, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़
- प्रो. उमाकांत यादव, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
- प्रो. अशोक कुमार रुस्तगी, प्राचार्य, के.ए. पी.जी. कालेज, कासगंज
- प्रो. रामसुमेर यादव, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ
- प्रो. वागीश दिनकर, राणा पी.जी कालेज, हापुड़
- प्रो. सारिका वार्ष्णेय, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़
- श्री जीवन सिंह आर्य, प्राचार्य, श्रीसर्वदानन्द सं.म. गुरुकुल साधु आश्रम, अलीगढ़
- प्रो. ओ. पी. राय, प्राचार्य, बरेली कॉलेज, बरेली
- प्रो. दुष्यन्त कुमार, उपाधि महाविद्यालय, पीलीभीत
- प्रो. अर्चना सिंह, प्राचार्या, एस. बी. डी. महिला कालेज, धामपुर, बिजनौर
- डॉ. करुणा आर्या, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
- डॉ. सत्यकेतु, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ
- डॉ. बाबूलाल मीणा, राजकीय महाविद्यालय, अलवर, राजस्थान
- डॉ. ओमकार, राजकीय महाविद्यालय, जलेसर, एटा

समन्वयक समिति

डॉ. बीना रुस्तगी, डॉ. बबलू सिंह, डॉ. नवनीत विश्नोई,
डॉ. विशेष कुमार राय, डॉ. अनुराग कुमार पांडेय, डॉ. पीयूष कुमार

आयोजन मण्डल

डॉ. संजय शाही	डॉ. अनिल रायपुरिया	डॉ. निखिल कुमार दास
डॉ. मनन कौशल	डॉ. हरेंद्र कुमार	डॉ. मनमोहन सिंह
श्री हिमांशु शर्मा	श्री राजकिशोर	श्री मोहम्मद मूसा
डॉ. ज्ञानेन्द्र सिंह	डॉ. सौरभ अग्रवाल	डॉ. पवन गेरा
डॉ. मनीष टंडन	डॉ. विकास मोहन श्रीवास्तव	श्रीमती ज्योति
श्री मयंक अरोडा	श्री अमित भटनागर एवं समस्त महाविद्यालय परिवार।	

सम्पर्क सूत्र

https://www.jshpgc.ac.in/ info@jshpgc.ac.in

https://bit.ly/3rm1Fmv https://twitter.com/j_amroha

9927057723, 9058739773, 7398022221, 9412619392

पंजीकरण पत्र

जगदीश सरन हिन्दू स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अमरोहा

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

दयानन्द-दर्शन के विविध आयाम

दिनांक : 05 व 06 नवम्बर, 2022
(दिन शनिवार एवं रविवार)

नाम.....

पद/विभाग.....

महाविद्यालय/विश्वविद्यालय (पता).....

.....

.....मोबाइल नं0.....

ई-मेल.....

शोध-पत्र का शीर्षक/विषय.....

.....

.....

आगमन.....

प्रस्थान.....

आवास (हाँ/नहीं).....

तिथि..... हस्ताक्षर

पंजीकरण नि:शुल्क

(पंजीकरण-पत्र की छायाप्रति भी मान्य होगी)

मुद्रित सामग्री

सेवा में,

प्रो./डॉ. _____

_____

_____

प्रेषक,

डॉ. अरविन्द कुमार

असिस्टेन्ट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग
संयोजक- राष्ट्रीय संगोष्ठी
जे.एस. हिन्दू स्नातकोत्तर महाविद्यालय
अमरोहा-244221 (उ.प्र.)
Mobile : 9536833811